विचार बिन्दु

मनुष्य को आपत्ति का सामना करने, सहायता देने के लिए मुस्कान से बड़ी कोई चीज़ नहीं है। –तिरुवल्लुवर

अँधेरे को गहरा करती लाल बत्ती और लाल पट्टी

हर देश को स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु कठिन परीक्षाओं से गुज़रना पड़ता है, बलिदान करना पड़ता है। ऐसे देश अपवाद ही होंगे जिन्हें सरलता से स्वतंत्रता मिल गई हो। भारत को भी अनेक बलिदान देने पड़े हैं। स्वतंत्रता के बाद भारत में लोकतांत्रिक पद्धति के शासन की स्थापना हुई। जनता द्वारा जनता के लिये, जनता की सरकार का प्रारंभ हुआ। लोकतंत्र की स्वस्थ परम्पराओं के साथ हमने ब्रिटिश राज की अनेक विकृतियों को भी स्वीकार ही नहीं किया, उन्हें पोषित व पल्लवित किया। इन्हीं में से एक यह रही कि शासक व शासित का भेद बरकरार बनाये रखा। इनमें से एक है राजकीय वाहनों पर लाल पट्टी और कई शासकीय अधिकारियों के वाहनों पर विशेष प्रकार की नीली या लाल बत्तियाँ। प्रश्न यह पूछा जाना चाहिये कि राजकीय वाहनों पर उन्हें सामान्य वाहनों से अलग करने की आवश्यकता क्यों पड़ी? धीरे-धीरे यह प्रवृत्ति जनप्रतिनिधियों, प्रमुख अथवा श्रेष्टि वर्ग के लोगों ने भी अपना ली।

प्रधानमंत्री ने अपने प्रथम टर्म के प्रारंभ में ही इस परम्परा पर प्रहार किया और इसमें कुछ कमी आई। परंतु अभी भी किसी न किसी रूप में इसका प्रयोग करने की दुष्प्रवृत्ति विद्यमान है। राजकीय कार्य अथवा अभियान के किसी कार्य में व्यवधान न हो अतः कानून व्यवस्था अथवा तत्काल चिकित्सा से जुड़े वाहनों पर लाल पट्टी उचित हो सकती है। परंतु घर से ऑफिस तथा ऑफिस से घर जाने अथवा सामान्य कर्त्तव्यों के निर्वहन में इसकी कतई आवश्यकता नहीं है। केवल दंगों व उपद्रवों में इनका त्वरित कार्रवाई हेतु उपयोग हो सकता है, परंतु उसमें भी आजकल राजकीय वाहनों को विशेष रूप से चिन्हित किया जा रहा है, अतः इसके विकल्प पर भी सोचा जाना चाहिये। कर्त्तव्यों के सामान्य निर्वहन में तो ये परम्परा अत्यंत बाधक बन ही रही है। पहली बुराई तो यही बढ़ती है कि ये लाल चिन्ह वाले हमारे हाकिम व हम इनके गुलाम हैं। इस प्रकार लाल चिन्ह वालों और सामान्य जनता में कभी तादात्म्य स्थापित हो ही नहीं सकता। तुरंत चिन्हों से दूर होने-रखने की भावना जागृत होती है। दूसरा दुष्परिणाम यह है कि असामाजिक तत्व पहले ही सावधान होकर अदृश्य हो जाते हैं। अधिकारियों व जन प्रतिनिधियों को ज़मीनी हालत ही पता नहीं लगती। कानून-व्यवस्था के ज़िम्मेदार व्यक्तियों के लिये विशेष व्यवस्था अपवाद रह सकती है।

जहाँ कहीं भी कर्त्तव्य निर्वहन की निगरानी की जानी है, यह लाल पट्टी, लाल बत्ती तथा हॉर्न आदि अनुशासनहीन एवं लापरवाह लोगों को दूर से ही सावचेत कर देता है। विशेष रूप से स्कूल, हॉस्पिटल, गली, मोहल्लों, सड़कों व बाज़ारों में आप बिना सूचना ही वस्तुस्थिति जान सकते हैं। शासकीय अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों की बेखबरी इसी कारण बढ़ती है।

60 वर्ष एक ही दल का शासन रहा और उसने गुलामी की ही अनेक परपम्राओं को और बढ़ाया। इनमें से एक सिविल लाइन्स और अधिकारियों व राजनेताओं के बड़े-बड़े बंगले हैं और उनका विशाल क्षेत्रफल है। वे सभी सामान्य जनता के बीच सामान्य नागरिक की भाँति रहते तो जनता से सामीप्य के कारण कुछ अंधेरा दूर होकर, लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रकाश फैलता।

चौराहों पर खड़े यूनिफार्मधारियों को कहीं एक ओर खड़े, गपशप करते, धूम्रपान करते, विश्राम करते देखा जा सकता है। बताइये, लाल पट्टी, लाल बत्ती और हॉर्न के साथ आप उन्हें कैसे देख पायेंगे? स्कूल में छात्रों-शिक्षकों के सुचारू शिक्षण प्रशिक्षण, अनुशासन एवं कर्त्तव्य पालन का निरीक्षण कैसे होगा? हॉस्पिटल की अराजकता, अव्यवस्था, अस्वच्छता, अनुशासनहीनता व वहाँ एक-दूसरे के प्रति व्यवहार, चिकित्सकों का उपचार स्तर आदि कैसे देख पायेंगे? यही नहीं पूर्व सूचना प्रसारित होने पर तो स्वच्छता, सड़क, बाज़ार व गली-मौहल्लों की वास्तविक समस्याएँ सदैव अनजानी ही रहेंगी।

यशस्वी राजाओं के शासन में उनके भेष बदल कर सामान्य जनता की समस्या जानी जाती थी। राम राज्य में भी राजा व गुप्तचरों द्वारा यह कार्य किया जाता था। लाल पट्टी, लाल बत्ती और हॉर्न आदि से यह कार्य कभी संभव नहीं होगा। उल्लेखनीय यह भी है कि लाल बत्ती, लाल पट्टी आदि की आड़ में असामाजिक तत्व तस्करी व कई अन्य असामाजिक गतिविधियाँ करते हैं, टोल टेक्स की भी चोरी करते हैं। आवश्यक है कि लाल पट्टी व लाल बत्ती की परम्परा को पूर्णतः निरुत्साहित किया जाय। निरीक्षण अक्सर किये जायें और वे भी ज़्यादा से ज़्यादा असूचित। पूर्व सूचित निरीक्षण भी हो, परंतु वह कम से कम हो। स्मरण रहे कोई भी चिन्ह जो आपको दूसरों से अलग करता है, आप में अहंकार को जन्म देता है। एक परम्परा लाल बस्ते व लाल फीताशाही की और है। हमारे देश में नौकरशाही में दरअसल क्लर्क निर्णय करता है, वही पढ़ता है, वही जानकारी रखता है। बाबू (कनिष्ठ या वरिष्ठ लिपिक) जो टिप्पणी लिखेगा, उस पर सेक्शन ऑफिसर, सहायक, सचिव/उपसचिव, सचिव सब चिड़िया बिठाते जायेंगे और शायद वही टिप्पणी शीर्षतम स्तर पर अनुमोदित हो जायगी। कई स्तर हैं, कई विभाग हैं, ऐसा हो ही नहीं सकता कि विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के निर्णय त्वरित हो सकें।

भारत की लाल फीताशाही व लाल बस्ता सारे विश्व में प्रसिद्ध हैं। यह भी जनता को शासन में विश्वास कम करता है, दोनों को दूर रखता है, भ्रष्टाचार बढ़ाता है। ऑनलाइन कार्य प्रणाली के सुपरिणाम भी हैं और दुष्परिणाम भी। हाल ही में एक अनुज्ञा पत्र के नवीनीकरण हेतु 5 मई को कार्रवाई कर दी गई परंतु अभी तक ढाई माह बाद भी अनुज्ञा प्राप्त न होना (एक ही नगर व एक ही परिसर से) हमारी लाल फीताशाही का ताज़ा उदाहरण है, साथ ही कर्मचारियों व अधिकारियों की शिथिलता का भी। अधिकृत अधिकारियों व जन प्रतिनिधियों को शासकीय वाहन व शासकीय सुरक्षा की व्यवस्था भी शासन व जनता में दूरी बढ़ाती है। सभी निजी वाहन रखें, भले ही उन्हें वाहन भत्ता दे दिया जाय। इन दोनों सुविधाओं से सारे देश की जनता पर अत्यधिक भार पड़ता है। ये सुरक्षा व्यवस्था केवल उनको दी जाय जिनकी जान को खतरा है। सभी जन प्रतिनिधियों को खतरा है तो वे जन प्रतिनिधि ही क्यों बनते हैं। गुलामी की ये सभी प्रवृत्तियाँ शासन द्वारा जनता व समाज में अंधेरा बढ़ाने में सहायक हैं।

इस देश का दुर्भाग्य है कि 75 वर्ष बाद भी जब हम स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, अभी तक प्रशासन में लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना नहीं हुई। 60 वर्ष एक ही दल का शासन रहा और उसने ग़ुलामी की ही अनेक परपम्राओं को और बढ़ाया। इनमें से एक सिविल लाइन्स और अधिकारियों व राजनेताओं के बड़े-बड़े बंगले हैं और उनका विशाल क्षेत्रफल है। वे सभी सामान्य जनता के बीच सामान्य नागरिक की भाँति रहते तो जनता से सामीप्य के कारण कुछ अंधेरा दूर होकर, लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रकाश फैलता।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

राशिफल मंगलवार 26 जुलाई, 2022

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, आर्द्रा नक्षत्र रात्रि 4:09 तक, व्याघात योग सांय 4:07 तक, वणिज करण सांय 6:48 तक, चन्द्रमा मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरू-मीन, शुक्र-मिथुन, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से रात्रि 4:09 तक है। आज भद्रा सांय 6:48 से बुधवार प्रातः 8:00 तक रहेगी। आज मास शिवरात्रि, मंगला गौरी पूजा है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:13 से 10:53 तक, लाभ-अमृत 10:53 से 2:14 तक, शुभ 3:54 से 5:34 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:52, सूर्यास्त 7:15

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कारणों से व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रतिष्ठित व्यावसायिक संपर्क बन सकते हैं। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मन में असंतोष बना रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि का भय बना रहेगा।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक परेशानियों से राहत मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

धनु
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में चल रहे वाद-विवाद समाप्त हो सकते हैं और अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कारगिल युद्ध-----
भारतीय सेना और सैनिकों की गौरव गाथा

निसंदेह कारगिल संघर्ष दुनियां भर के पहाड़ी इलाकों में अत्याधिक ऊंचाई पर लड़ी गई लड़ाईयों में से एक लड़ाई है। कारगिल संघर्ष परमाणु बम शक्ति सम्प्पन भारत-पाकिस्तान के बीच हुआ पहला सशस्त्र युद्ध था। जहाँ 1965 में हम लाहोर तक पहुंच गये और पाकिस्तान के होंसले पस्त कर दिए थे। इस युद्ध की परिणीती तास्कन्द समझोते में हुई थी वहीं 1971 में पाकिस्तान को दो भागों में विभाजित करके एक नये राष्ट्र बंगलादेश को जन्म दिया था। वहीं बीसवी शदी का निर्णायक एक मात्र युद्ध भी था जिसमें 93000 से ज्यादा पाकिस्तान के सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर भारतीय सेना के गोरव को उच्चतम शिखर पर पहुंचा कर विजय पताका फहरा कर तिरगें की शान बढ़ाई थी।

कारगिल युद्ध भारत पाकिस्तान के 1965, 1971 एवं कबाइलियों के संघर्ष से पूर्णतया अलग तरह का था। कारगिल श्रीनगर से 205 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है कारगिल क्षेत्र में सर्दियों में तापक्रम -48 डिग्री पहुंच जाता है। कारगिल युद्ध को मोटे तौर पर तीन चरणों में विभक्त किया जा सकता है। कारगिल युद्ध भारत की सेना के पराक्रम शौर्य का परिचायक है।

पाकिस्तान की सेना और तथाकथित कश्मीरी उग्रवादियों ने भारत और पाकिस्तान के बीच की नियंत्रण रेखा पार करके भारत की जर ज़मीन पर कब्ज़ा करने की कोशिश की। संघर्ष की प्रारम्भिक अवस्था में पाकिस्तान ने दावा किया कि लड़ने वाले उसके नियमित सैनिक नहीं हैं वरन वे सभी कश्मीरी उग्रवादी-जेहादी हैं। पाकिस्तान के इस सफेद झूठ का शीघ्र ही पर्दा फाश हो गया क्योंकि युद्ध में बरामद हुए दस्तावेजों, हथियारों और पाकिस्तानी नेताओं के बयानों से साबित हुआ कि पाकिस्तान की सेना प्रत्यक्ष रूप में इस युद्ध में शामिल थी। कारगिल- द्रास सेक्टर में हुए संघर्ष में लगभग 30000 भारतीय सैनिकों ने भाग लिया वहीं पाकिस्तान के नियमित सैनिकों के अलावा करीब 5000 घुसपेठियों ने भी पाक सैनकों की मदद की थी। भारतीय सेना ने इस लड़ाई में बोफोर्स तोपों का प्रयोग किया इन तोपों ने दुश्मनों पर कहर बरपा। भारतीय वायुसेना ने ऑपरेशन सफेद सागर के अंतर्गत कठिन भोगोलिक परिस्थतियों के बावजूद थल सैनकों की सहायता की थी। भारतीय नोसेना ने ऑपरेशन तलवार के अंतर्गत पाकिस्तानी बंदरगाहों विशेषतया

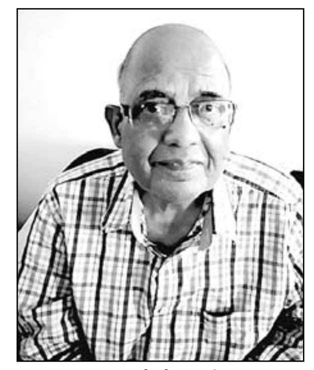
डा. जे.के.गर्ग

कराची बंदरगाह की नाके बंदी कि जिससे पाक सैनिकों को कोई मदद नहीं मिल सके। भारतीय नोसेना की उत्तरी एवं पश्चिमी फ्लीट ने उत्तरी अरब सागर के क्षेत्र में आक्रमक पेट्रोलिंग कर पाकिस्तान के समुद्रीय व्यापार को क्षति पहुचाई। इस लड़ाई में भारतीय सेना के तीनो अंग थल, वायु एवं नो सेना परस्पर अनुकरणीय समन्वय का परिचय दिया जिसके फलस्वरूप इस युद्ध में भी हमें विजयश्री प्राप्त हुयी।

युद्ध समाप्ति के तुरंत बाद में पाकिस्तान ने दावा किया उसके मात्र 375 सैनिक ही मारे गए हैं लेकिन बाद में सच्चाई सामने आई कि पाक के तकरीबन चार हजार सैनिक करगिल संघर्ष में मारे गए हैं। भारतीय सेना के मुताबिक 543 अफसर और जवान शहीद हुए जबकि करीब 1300 जख्मी हुए। महज एक भारतीय सैनिक को युद्ध बंदी बनाया गया था।

कारगिल संघर्ष के समय जहाँ अमेरिका ने पाकिस्तान को नियन्त्रण रेखा के उल्लघन का दोषी माना था वहीं 8 देशों, यूरोपियन यूनियन एवं के क्षेत्रीय संघटन ने भी पाकिस्तान की आलोचना कर सघंर्ष समाप्त करने एवं नियन्त्रण रेखा के उल्लघन को रोक कर सघर्ष के पूर्व वाली स्थिती पर लोटने को कहा। अमेरिकन राष्ट्रपति क्लिंटन और नवाज शरीफ के संयुक्त व्यक्तय में नियन्त्रण रेखा का सम्मान करते हुए भारत-पाकिस्तान के विवादों को बातचीत से शांतीपूर्ण तरीकों से सुलझाने को कहा। चारों ओर से अंतर्राष्ट्रीय दबाव के कारण तत्कालीन पाकिस्तान के प्रधानमंत्री श्री नवाज़ शरीफ ने बचे हुए पाकिस्तान के सैनिकों को भारतीय सीमा के अन्दर वाले क्षेत्र से पीछे हट जाने का आदेश दिया। भारत की विजय के साथ 26 जुलाई 1999 को संघर्ष समाप्त हुआ। कारगिल युद्ध में भारत की विजय की स्मृति में प्रति वर्ष 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। पाकिस्तान की पराजय के कारण पाकिस्तान में राजनैतिक और आर्थिक अस्थिरता बढ़ गई जिसकी परिणति में नवाज़ शरीफ निर्वाचित सरकार का तख्ता पलट कर वहां की सेना के प्रमुख परवेज़ मुशर्रफ़ राष्ट्रपति बन गए। कारगिल युद्ध के अनेकों शूरवीर बहादुर एवं फोलादी इरादों वाले जवानों में अनुज नायर, विक्रम बत्रा एवं योगेन्द्र यादव तो प्रमुख हैं ही, भारत को उनके और उनके साथियों की वीरता तथा फौलादी देश भक्ति के इरादों से युद्ध में निर्णायक विजयश्री मिली थी। इस लड़ाई में मुख्य विजय टाईगर हिल्स पर कब्जे पर थी। कारगिल युद्ध के उपरोक्त नायकों के अतिरिक्त कारगिल संघर्ष के अन्य हीरों यथा केप्टिन जेरी प्रेमराज, केप्टिन शशि भूषण घड़ियाल, सूबेदार रघुनाथ सिंह एवं हवलदार सीसराम गिल के योगदान को भी समूचा राष्ट्र हमेशा याद रखेगा। कारगिल विजय पर्व के 23वीं वर्ष गांठ के मौके पर समूचा भारत कारगिल संघर्ष के समस्त शहीदों को शतः शतः नमन करता है और उनके देशभक्ति के जज्बे को सलाम भी। समूचा राष्ट्र कारगिल विजय दिवस के मौके पर भारत की अखंडता पर तिरछी नजर रखने वालों को कड़ी चेतावनी देता है कि वे अपनी नापाक हरकतों से बाज आयें।

जय हिंद जय किसान जय जवान। भारत का बच्चा करे उनका सम्मान और सलाम।।

डा. जे.के.गर्ग,
पूर्व संयुक्त शिक्षा निदेशक
कालेज शिक्षा जयपुर

पावटा सीएचसी में जगह-जगह टपक रहा पानी

पावटा, (निसं)। सावन की बारिश ने उपखंड पावटा के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की व्यवस्थाओं की पोल खोलकर रख दी है। व्यवस्थाओं को देखकर लगता है कि कई सालों से अस्पताल में मरम्मत का कार्य नहीं किया गया।

नतीजा लगातार हो रही बारिश से अस्पताल में कई जगहों पर छत से पानी टपकने लगा है। अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड, जनरल वार्ड, इमरजेंसी वार्ड के बाहर पूरे बरामदे सहित कई जगह पानी टपकने से मरीजों को परेशानियों का सामना करना पडा। इमरजेंसी वार्ड में तो छत से टपक रहे पानी से दीवारों मे करंट तक दौड गया। इससे कभी भी कोई बडा हादसा हो सकता है।

पावटा सीएचसी के इमरजेंसी वार्ड में पानी टपकने से उपकरण खराब हो रहे है।

वही इमरजेंसी वार्ड में उस समय करीब 5-6 मरीज व जनरल वार्ड में लगभग 3-4 मरीज टपकते पानी मे अपना इलाज करवा रहे थे। अस्पताल स्टाफ ने बताया कि पानी टपकने से मरीजों के बेड तक गीले हो जाते है। जनरल वार्ड में तीमारदारों के बैठने की जगह व मरीजों के बेड पर प्लास्टर टूट कर गिरने लगा है। पावटा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. एस के वर्मा ने बताया कि भवन काफी पुराना हो गया है। पहले भी इसकी मरम्मत करवाई गई थी। बजट आते ही दुबारा मरम्मत के साथ और कोई भी समस्या होगी तो उसका भी समाधान किया जायेगा।

ताले में कैद है बाबा रामदेव के गुरु बालीनाथ जी का घुणा

पोकरण, (निसं)। ऐतिहासिक बाबा रामापीर के गुरु पाली नाथ जी का घुणा में पुजारियों के आपसी विवाद के चलते लंबे समय से बंद होने के कारण प्रशासन की देखरेख में भक्तों के लिए दर्शन करवाने एवं वहां चढ़ने वाले सामग्री एवं नगद कुर्क धुने की देखरेख प्रशासन द्वारा दी जा रही है।

वहीं प्रशासन द्वारा सीसीटीवी कैमरे एवं कर्मचारी की नियुक्ति के आदेश होने के उपरांत भी वहां रामदेव जी के गुरु बालक नाथ जी का घुणा ताले में बंद होने के कारण श्रद्धालुओं को दर्शन लाभ नहीं मिल रहा है। सावन मास के आते ही शहर तथा बाबा रामदेव की नगरी रामदेवरा में श्रद्धालुओं की आवक एकाएक तेज हो गई है। बाबा की समाधि के दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालु बाबा रामदेव के गुरु बालीनाथ के धूणे के दर्शन किए बिना अपनी यात्रा को अधूरा समझते हैं। जिसके चलते रामदेवरा आने वाला प्रत्येक श्रद्धालु पोकरण बालीनाथ जी के धुने पर दर्शन करने के लिए अवश्य आता है लेकिन पुजारियों के दो परिवार के बीच आपसी कलह के चलते प्रशासन ने बालीनाथ धूने की संपत्ति को कुर्क कर रखा है जिसके चलते पिछले लंबे समय से बाबा रामदेव के गुरु बालीनाथ ताले में कैद हैं। साथ ही प्रशासन द्वारा श्रद्धालुओं के लिए कोई अतिरिक्त सुविधा नहीं की गई है।

- पुजारियों के दो परिवार के बीच आपसी कलह
- प्रशासन ने बालीनाथ धूने की संपत्ति को कुर्क कर रखा है

तत्कालीन उपखंड अधिकारी अनिल जैन ने धुणे के कुर्की के आदेश जारी किए थे। आदेश को लगभग 5 वर्ष से अधिक का समय हो जाने के बाद भी अभी तक प्रशासन द्वारा दूरदराज से आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए कोई विशेष कदम नहीं उठाया है।

शंकरभाई, श्रद्धालु, निवासी डीसा के अनुसार बाबा रामदेव की समाधि के दर्शन के बाद जब पोकरण बालीनाथ धूने के दर्शन के लिए पहुंचे तो वहां पर ताला लगा हुआ था दर्शन की व्यवस्था है और ना ही श्रद्धालुओं की कोई सुविधा।

किशोर, श्रद्धालु, मुम्बई के अनुसार दो साल पहले भी बालीनाथ के धुने पर ताला लगा था। कोरोना काल में आना नहीं हुआ, लेकिन हाल ही में सपरिवार दर्शन के लिए पहुंचा तो यहां पर दर्शनों के लिए कोई व्यवस्था नहीं है।

प्रसूता ने पांच बालक-बालिकाओं को जन्म दिया, तीन की हुई मौत

करौली, (नि.स)। कहते हैं ऊपर वाला जब देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है। ऐसा ही कुछ हुआ है। मासलपुर के पिपरानी गांव निवासी रेशमा (25) शादी के 7 साल बाद पहली बार मां बनी है। रेशमा ने करौली के एक निजी चिकित्सालय में 5 बालक-बालिकाओं को जन्म दिया है। जिनमे से एक बालक और दो बालिकाओं की उपचार के दौरान मृत्यू हो गई।

करौली के भारत हॉस्पिटल की चिकित्सक डॉ0 आशा मीणा ने बताया कि रविवार को प्रातः पिपरानी गॉव निवासी रेशमा अस्पताल मे प्रसव के लिये भर्ती हुई थी। जिसने दो बालक और 3 बालिकाओं को जन्म दिया है। 7 माह के बच्चों को जन्म दिया है। प्रसव के बाद मां की तबीयत ठीक है। हालांकि बच्चे कमजोर हैं। जिन्हें करौली के राजकीय हॉस्पिटल मातृ एवं शिशु इकाई स्थित एसएनसीयू वार्ड में भर्ती कराया है। एसएनसीयू इकाई प्रभारी डॉ0 महेंद्र मीणा ने बताया कि सभी

पिपरानी गांव की प्रसूता रेशमा ने शादी के 7 साल बाद 5 बालक-बालिकाओं को जन्म दिया।

बालक 300 से 660 ग्राम तक वजन के हैं।

व्हन्हें इंटेंसिव केयर की आवश्यकता होने के कारण जयपुर रैफर किया जा रहा है। देखने लायक यह रहा की पांचों बालक बालिकाओ को उपचार के लिये जयपुर के जेके लॉन हॉस्पिटल ले जाने से पूर्व ही एक बालक व दो बालिकाओं की मृत्यु हो गई। रेशमा के जेठ गब्बरु ने बताया कि उनका छोटा भाई अश्कअली केरला में मार्बल फिटिंग का काम करता है। अश्क अली की करीब 7 वर्ष पूर्व रेशमा से शादी हुई थी। लेकिन शादी के कई साल बीतने के बाद भी उन्हें बच्चा नहीं हुआ। जिसके कारण कई स्थानों पर दिखाया और उपचार कराया। अब अल्लाह ने उनकी सुनी है और एक साथ 5 बच्चों से झोली भर दी मगर उन पॉच बच्चों में से तीन की मृत्यु हो गई। वही मातृ एवं शिशू संस्थान के डॉ0 महेंद्र मीणा ने बताया कि मातृ शिशु इकाई में लोटन बाई पत्नी प्रदीप मीणा 22 निवासी चौधरीपुरा मंडरायल ने एक साथ तीन बच्चों को जन्म दिया है। जिनमें एक बालक और दो बालिकाएं हैं। 2लोटन बाई भी शादी के बाद पहली बार माँ बनी है। मां और बच्चे पूरी तरह स्वस्थ हैं।

- करौली के भारत हॉस्पिटल में प्रस्व के दौरान तीन नवजात की मौत हो गई
- सभी बालक 300 से 660 ग्राम तक वजन के हैं : डॉ0 महेंद्र मीणा